शोध- सार

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष परिकल्पना से पर्याप्त भिन्न रहे हैं | परिकल्पना में घनानंद और वली दकनी में काफ़ी वैषम्य देखा गया था किन्तु निष्कर्ष ये बता रहे हैं किदोनों कवियों में प्रेम के स्तर पर पर्याप्त साम्यता है |

घनानंद और वली दकनी दोनों कवियों के प्रेम पर जब विचार किया गया तो पाया गया कि भारतीय और ईरानी प्रेमपद्धतियों का प्रभाव और उनका समन्वय दोनों कवियों के यहाँ समान रूप से दिखाई पड़ता है क्योंकि दोनों के यहाँ विरह और वेदना या दर्शनाभिलाषा के रूप में प्रेम का प्रदर्शन कहीं स्त्री की ओर से है तो कहीं पुरुष की ओर से | प्रेमी और प्रिय या माशूक़ और महबूब कहीं स्त्री है तो कहीं पुरुष | घनानंद की भाँति वली की ग़ज़लों में भी गीतात्मकता का होना इस बात की ओर संकेत करता है कि उन पर भारतीय काव्य- परंपरा का पर्याप्त प्रभाव था |

घनानंद के कुछ पदों और वली दकनी की कुछ ग़ज़लों में कहीं नायक प्रेम से विह्वल और प्रेम पात्र की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील दिखता है तो कहीं नायिका प्रेम में विह्वल और प्रेमी को प्राप्त करने का प्रयास करती है | दोनों के यहाँ प्रेम में भावों की प्रस्तुति पर बल है | नायिका दोनों कवियों के यहाँ विरह और वेदनामय रूप में दिखती है | घोर रूपासक्ति भी दोनों के यहाँ मिलती है | दोनों कवियों के यहाँ वासना अंत में साधना में पर्यवसित हो जाती है |

फ़ारसी काव्य में क्योंकि तसव्वुफ़ (सूफ़ीवाद) का बोलबाला था और इन दोनों कवियों पर क्योंकि फ़ारसी का प्रभाव भी था इसलिए अध्यात्म दोनों के यहाँ नज़र आता है | या यों भी कहा जा सकता है कि सूफ़ी प्रभाव दोनों कवियों पर रहा है क्योंकि अध्यात्म सूफ़ी दर्शन में प्रमुखता रखता है | दोनों कवियों के यहाँ प्रेम के लौकिक और अलौकिक दोनों रूप नज़र आते हैं और लौकिक प्रेम हीअंत में अलौकिक प्रेम में पर्यवसित हो जाता है | साथ ही प्रेम की पीर और तीव्र विरह वेदना का उन दोनों के काव्य में होना भी इस ओर संकेत करता है कि घनानंद और वली दकनी दोनों कवियों पर सूफ़ी प्रभाव रहा है |

रीतिकाल के समय जहाँ कुछ कवि दरबार से संबद्ध थे, वहीं कुछ दरबार का त्याग करके प्रसन्न थे | घनानंद और वली दोनों एक ही श्रेणी में आ खड़े होते हैं, दोनों ने समान रूप से दरबार- त्याग के विकल्प का चयन किया इसीलिए दोनों के यहाँ प्रेम में स्वच्छंदता देखी जा सकती है | सामजिक शालीनता दोनों के प्रेम में नहीं है और न ही गार्हस्थिकता |

रीति का आंशिक प्रभाव भी दोनों कवियों के प्रेम पर रहा है | दोनों कवियों के यहाँ प्रेम की आलंबन यानी नायिका अपनी पूरी सज-धज के साथ उपस्थित होती है | नायिका की वेशभूषा दोनों के यहाँ भड़कीली है | हाव-भाव प्रभविष्णु और मादक हैं | राधा और कृष्ण दोनों कवियों के यहाँ आलंबन रूप में रहे हैं जिससे इन पर रीति प्रभाव स्पष्ट है | एकांतिकता और अनन्यता दोनों के यहाँ है जिसकी सिद्धि के लिए दोनों ने उच्च कोटि की स्थिरता प्रदर्शित की है | दोनों के यहाँ मौजूद प्रेम का वैषम्य इस अनन्यता और स्थिरता को अधिक उज्ज्वल रूप में प्रस्तुत करता है | वेदना की मार्मिकता और मौनता की तीव्रता भी दोनों के यहाँ मौजूद है |

शिल्प के स्तर पर यदि देखा जाये तो फ़ारसी प्रभावस्वरूप उक्ति- वैचित्र्य और विरोधाभास दोनों के यहाँ मिलता है | संगीतात्मकता भी दोनों के यहाँ मिलती है |

अब घनानंद और वली दकनी के प्रेम में पायी जाने वाली विषमताओं पर विचार कर लिया जाए | जहाँ घनानंद के प्रेम में भावात्मकता है वहीं वली के प्रेम में शारीरिकता | घनानंद के प्रेम में आद्यंत आन्तरिकता मिलती है किन्तु वली के प्रेम में ये केवल वियोग में दिखाई पड़ती है | जहाँ घनानंद के यहाँ प्रेम का आरंभिक और अंतिम दोनों रूप विद्यमान हैं वहीं वली के यहाँ केवल आरंभिक रूप जिसमें शारीरिक वासना और भोग-लालसा की प्रधानता रहती है | यद्यपि वली के यहाँ प्रेम में श्रृंगार के अश्लील वर्णन नहीं है किन्तु फिर भी उनके लौकिक प्रेम में वह उदात्तता और गंभीरता नहीं दिखाई पड़ती जैसी की घनानंद के यहाँ | घनानंद के यहाँ शारीरिक वासना लौकिक और अलौकिक प्रेम के दोनों स्तरों पर मानसिक वासना के रूप में पर्यवसित होती है किन्तु वली के यहाँ केवल अलौकिक प्रेम के स्तर पर |

इस प्रकार अंत में हम कह सकते हैं कि घनानंद और वली दकनी के प्रेम के स्वरूप में वैषम्य की तुलना में साम्य अधिक मिलता है | इसके अतिरिक्त इनका प्रेम जहाँ एक ओर हमें फ़ारसी और सूफ़ी काव्य-परंपरा से जोड़ता है वहीं दूसरी ओर भारतीय काव्य-परम्परा से | घनानंद और वली दकनी के प्रेम को फ़ारसी और भारतीय प्रेम पद्धतियों का संगम- स्थल कहा जाए तो अनुचित न होगा |